

॥ हयग्रीव संपदास्तोत्रम् ॥

हयग्रीव हयग्रीव हयग्रीवेति वादिनम् ।
नरं भुञ्जति पापानि दरिद्रमिव योषितः ॥ १ ॥

हयग्रीव हयग्रीव हयग्रीवेति यो वदेत् ।
तस्य निस्सरते वाणी जह्नुकन्याप्रवाहवत् ॥ २ ॥

हयग्रीव हयग्रीव हयग्रीवेति यो ध्वनिः ।
विशोभते स वैकुण्ठकवाटोद्घाटनक्षमः ॥ ३ ॥

श्लोकत्रयमिदं पुण्यं हयग्रीवपदाङ्कितम् ।
वाटिराज्यतिप्रोक्तं पठतां संपदां पदम् ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीमद्वाटिराजपूज्यचरणविरचितं हयग्रीवसंपदास्तोत्रं
संपूर्णम् ॥